Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 20th July 2019, Revised on 25th July 2019; Accepted 29th July 2019

आलेख

विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में गिरावट के साथ बढ़ती कुसमायोजन प्रवृति पर एक विश्लेषण

*** डॉ. नरेंद्रकुमार पाल**

Assistant Professor, M.Ed. College, 38, Keshav Bunglows, New Shahibaug, Ahmedabad
Email-drnavinsir@yahoo.in, Mob.- 9924181920

मुख्य शब्द *- नैतिक, मूल्य, कुसमायोजन प्रवृति आदि।*

सारांश

प्रस्तुत लेख वर्तमान समय में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के गिरावट और सामाजिक कुसमायोजन के प्रति प्रभावी कारण और जरुरी सुझाव से सम्बंधित है. तकनिकी उपकरणों का हद से ज्यादा प्रयोग समाज में एकदूसरे से अंतर बढ़ाने में सबसे प्रभावी माध्यम है. विश्व को अपनी मुठ्ठी में लेके ज्यादा से ज्यादा ज्ञान की भूख समाज में आपसी रिश्तो में अंतर बढ़ने के लिए जिम्मेदार है. साथ ही नैतिक मूल्यों के में गिरावट भी भविष्य के राष्ट्र निर्माण में बाध्य है. प्रस्तुत विषय को लेके जरुरी तथ्यों और कारणों को जान के महत्वपूर्ण सुझाव देने का प्रयास किया गया है.

प्रस्तावना:

देश वर्तमान समय में हर क्षेत्र में प्रगति करता देखा जा सकता है. वर्तमान समय में शिक्षण प्रणाली में भी काफी सुधार के साथ नए समाज के अनुरूप तकनिकी शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है. उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के ज्ञान में विस्तार के साथ संशोधन के क्षेत्र में देश में प्रगति देखि जा सकती है. विकास के साथ विद्यार्थियों के मन-मस्तिष्क में राष्ट्रभावना को जागरूक करने की दिशा में भी अच्छे प्रयास देखे जा रहे है. जिनका अच्छा परिणाम हम देख सकते है और महसूस भी कर रहे है. अच्छी पहलुओं के साथ कुछ ऐसे पहलुओं की तरफ भी ध्यान देने की जरुरत

महसूस हो रही है की जहा विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में गिरावट और समायोजन में अवरोध देखने को मिल रहा है.

भारत जिसे नैतिक मूल्यों का प्रणेता व् विश्व के आध्यात्मिक गुरु के रूप में जाना जाता है और वसुधेव कुटुम्बकम जहा का आदर्श वाकय है. वहा के युवा वर्ग में यह मूल्यों तथा प्रेम, सद्भाव व् पारस्परिक सहयोग का आभाव हो गया है. इसका मुख्य कारण शिक्षा में मूल्यों की उपेक्षा व् सही मार्गदर्शन का आभाव है. जिससे भारतीय आदर्शो में आस्था से सम्बंधित मूल्यों में कुछ कमी देखि जा सकती है. महाविद्यालयों में तोड़फोड़, देश विरोधी प्रदर्शन, हड़ताल सामन्य बाते हो गई है. साथ ही वर्तमान समय में बढ़ती प्रतियोगिता का माहौल विद्यार्थियों को एक.दूसरे से ज्यादा महात्वाकांक्षी बनने की वजह से मूल्यों की उपेक्षा करते हुए समायोजन से दूर होते जा रहे है. वर्तमान समय में विद्यार्थियों में सामान्य जीवन में काफी उदाहरण सामने आ रहे है, आज सड़क हादसे के वक़्त घायल मरीज को अस्पताल ले जाने की बजाय उनका वीडियो बनाके सोशल नेटवर्किंग साइट पर डालना पसंद करते है. ट्रैफिक नियमो का उल्लंघन करना सामाजिक की बजाय खुद में ही सिमित से होकर रह गए है. पारिवारिक सभ्यो के साथ, मित्रो-रिश्तेदारों से मिलना और बाते करने से ज्यादा अपने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के साथ समय व्यतीत करना आम सा हो गया है. सामाजिक समायोजन से दूर होते हुए वर्तमान विद्यार्थियों में इनकी वजह से तनाव, मानसिक असंतुलन, स्वास्थ के प्रति उपेक्षा, मोटापा जैसे कई गंभीर रोगो का शिकार होते जा रहे है.

वर्तमान भौतिकवादी समाज में युवा.वर्ग और विद्यार्थियों को आसपास के समाज और पारिवारिक माहोल में आगे बढ़ने के लिए नैतिक मूल्यों को सीखने की बजाय मुख्य धारा से विपरीत शॉर्टकट काफी सिखने की नसीहत समाज से मिलती है. नैतिक मूल्यों और सामाजिक समायोजन से विपरीत वर्तमान उच्च शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों से भविष्य में समाज को काफी उम्मीद है पर वास्तविकता में इन विषयो को गंभीरता से लेते हुए काम करना आवशयक है.

नैतिक मूल्य एवं कुसमायोज से सम्बंधित कारण:

;१) प्रतियोगितात्मक वातावरण

;२) विचारधारा से ग्रसित

;३) भौतिकवादी युग

;४) मूल्यों का ह्रास

;५) सामाजिक अव्यवस्था

;६) आर्थिक असामनता

;७) बेरोजगारी का प्रभाव

;८) शिक्षण संस्थानों में श्रेष्ठ शिक्षकों का अभाव

;९) शिक्षा व्यवस्था में बदलाव

;१०) समाज के असंगठित होना

नैतिक मूल्य एवं कुसमायोज से सम्बंधित सुझाव :

;१) मूल्यों का प्रस्थापन और विस्तरण एवं सामाजिक समायोजन के लिए सबसे पहेली शुरुआत घर और परिवार के सदस्यों और वातावरण से होती है.

;२) शिक्षण संस्थानों में जरुरी पाठ्यक्रम में सुधार करके मूल्य शिक्षण पे ज्यादा जोर देना.

;३) प्रतियोगिता होनी चाहिए लेकिन स्वस्थ प्रतियोगिता का निर्माण हो और लक्ष्य प्राप्ति सिर्फ राष्ट्र विकास से सम्बंधित हो.

;४) तकनिकी ज्ञान जरुरी है लेकिन तकनिकी ज्ञान का उपयोग करके उपकरणों का गुलाम होना कुसमायोजन की दिशा की और ले जाता है.

;५) तकनिकी उपकरणों का सयमित उपयोग करना.

;६) आदर्श व्यक्तियों के जीवन चारित्र्य को विद्यार्थियों के मन और मस्तिष्क पे प्रभावी ढंग से आरोपित करना.

;७) पाठ्यक्रम में तकनिकी ज्ञान के साथ नैतिक मूल्यों और समायोजन सम्बंधित संतुलित पाठ्यक्रम का निर्माण करना जरुरी है.

;८) राष्ट्र के प्रति प्रेम और अपने कर्तव्य के लिए प्रेरित करनेवाले कार्यक्रमों और सेमिनार का आयोजन होना आवशयक है.

महत्वपूर्ण आयोग द्वारा सूचित टिप्पणियां

;१) डॉ. राधाकृष्णन आयोग (१९४८) ने विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रम में मानवीय एवं धार्मिक मूल्यों से सम्बंधित विषयवस्तु के समावेश को प्रथ्मकता देने का सुझाव.

;२) मुद्दलियार आयोग (१९५२-५३) एवं कोठारी आयोग (१९६३-६४) के अनुसार विद्यार्थियों की योग्यता व् परिणाम को देखते हुए उन्हें उचित मार्गदर्शन देने के साथ शैक्षणिकए सामाजिक व् व्यावसायिक जीवन में उन्हें अच्छी तरह समायोजित होम में सहायता देने की दृष्टि से निर्देशन सेवाओं के विस्तरण की आवश्यकता है.

;३) श्रीप्रकाश समिति (१९५६) ने प्राथमिक स्टार्स लेकर विश्वविद्यालय स्टार तक के पाठ्यक्रम में मूल्यों की शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान देने का प्रस्ताव दिया है.

विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य एवं समायोजन की क्षमता का विकास करने हेतु शिक्षा श्रेष्ठ माध्यम है और शिक्षा का दायित्व भी सबसे ज्यादा है. शिक्षा का मुख्या उद्येश्य बालको का सर्वांगी विकासकरना है. जिससे एक पूर्ण व् सफल मानव के रूप में स्वयं को प्रस्तुत कर सके. व्यक्ति के सर्वांगीण विकास से अभिप्राय विद्यार्थियों के शारीरिकए मानसिकए आद्यात्मिकए चारित्रिकए सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से विकास करना है.

महात्मा गाँधी के अनुसार- ***"शिक्षा से मेरा अभिप्राय है- बालक के शरीर, मन व् आत्मा का पूर्ण विकास "***

निष्कर्ष

ज्ञान से युक्त शिक्षित युवा ही राष्ट्र का निर्माता है. समाज व् नीतिनियमों के निर्माता का यह दायित्व है की शिक्षण में प्रयुक्त शिक्षा के हर स्टार पर पाठ्यक्रम निर्धारित करते समय मूल्य-शिक्षणए सामाजिक समायोजन के लिए जरुरी निर्देशन व् परामर्श की व्यवस्था के उचित महत्त्व पर जोर देने

की सिफारिश सूचित की गई है. भविष्य में देश के प्रति जिम्मेदार व मूल्यए संस्कृतिए समायोजन के साथ तकनीक का समन्वय होते हुए नए भारत के निर्माण में योग्य दिशा और बल मिलता है.

सन्दर्भ सूचिः

;१) डागर बी.एस., शिक्षा और मानव मूल्य

;२) सिंह एच.के., उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान

;३) गुप्ता ऍन. (२००५), मूल्यपरक शिक्षा और समाज

**** Corresponding Author:***

डॉ. नरेंद्रकुमार पाल, *Assistant Professor,*

M.Ed. College, 38, Keshav Bunglows, New Shahibaug, Ahmedabad

Email-drnavinsir@yahoo.in, Mob.- 9924181920